इस सदी के अंत में एक सपना

–राजेंद्र दानी

वह किसी राष्ट्रीय त्योहार का दिन था और दिन-भर देशभक्ति के गीत बजते रहे थे। शाम जब घिरी तो बहुत गहरे, डरावने काले बादल आसमान पर छा गए थे। बूंदा-बाँदी शुरू हो गई थी। रात होने तक शहर जाग रहा था, पर जाग का शोर नहीं था। उसी वक्त अचानक फ्रैंकलिन घबराए हुए आए थे और उन्होंने गिरीश को अत्यंत विचित्र और डरावनी बातें बतानी शुरू की थीं।

वे बोल रहे थे–''वह फुफकारता है तो रात के गहन सन्नाटे में उसकी आवाज दूर तक गूँजती है और मैं काँप जाता हूँ। अक्सर वह अंगडाई लेता रहता है और मजबूत छप्पर थरथराने लगता है। मैं सितार बजाने लगता हूँ तो उसकी जीभ लंबी होकर मेरे पास तक पहुँचने लगती है। मेरे हाथ डर से रुक जाते हैं। कभी-कभी रात में बिस्तर पर सरसराहट होती है। आँखें खुलने पर पाता हूँ वह बिस्तर पर है, ठीक मेरे बगल में। मेरे छटपटाकर उठने पर वह अदृश्य हो जाता है, जैसे रात की कालिमा में घुल जाता हो। लेकिन दूसरे ही पल वह म्याली पर नजर आता है। वह मुझे सपने में भी नहीं छोड़ता। अक्सर वहाँ किसी सुख-भरे वातावरण में वह अचानक चला आता है और धूल-भरी आँधियाँ चलने लगती हैं। तब वह बेहद लंबा हो जाता है, अंनत। कई बार मैंने उसके पंख लगे भी देखे हैं। वह रफ्तार में रहता है। कभी-कभी समय से आगे चला जाता है। वह बदलता रहता है। आप विश्वास नही करेंगे, वह जानकारियाँ नही लेने देता। किताबों, पत्रिकाओं और ऐसी अनेक चीजों से उसे सख्त नफरत है। मुझे इस सबके लिए उससे दूर जाना पड़ता है। भूलने की कोई तरकीब काम नहीं आती। गुनगुनाना शुरू करते ही वह तड़प उठता है और अपने चमकीले, मजबूत शरीर को म्याली पर

पटकने लगता है। म्याली चरमराने लगती है और मेरे होंठ एक-दूसरे से चिपक जाते हैं। मैं चिल्लाना भी चाहूँ तो वे खुलते नहीं। मेरी चिल्लाहट अंतड़ियों में दौड़ती रहती हैं। इस उछल-कूद में तेज दर्द उठता है और गले में आकर फंस जाता है। गला सूखकर फूल जाता है। घंटों यह हालत रहती है।''

इतना कहकर वे रुक गए थे। उनकी आँखों में गीलापन था। वे लगातार गहरी साँसें ले रहे थे। गिरीश हक्का-बक्का था। कुछ उनकी बातों पर और कुछ उनकी हालत पर। उनकी ऐसी हालत पहली बार देखी थी उसने। उनकी बातें जब तक चलती रहीं तब तक वह एक डरावने आश्चर्यलोक में था। एक अत्यंत अविश्वसनीय दुनिया थी वह। अपनी तत्काल प्रतिक्रिया के लिए वह असमर्थ था और उन्हें गहरी निगाहों से देख रहा था।

अपनी अब तक की जिंदगी में वह हमेशा ऐसे लोगों के काम आता रहा है। सहयोग-सहायता के लिए हमेशा तत्पर। वैचारिक रूप से भी ऐसे लोगों के साथ वह खुद को खड़ा पाता रहा है। फिर ये तो फ्रैंकलिन हैं जिनके लिए उसके अंदर न जाने क्यों एक खास लगाव है, ऐसा जिसमें अनेक भाव है। कोई समानता नहीं थी फिर भी यह था। अपनी समझ के चलते वह इसे दुर्लभ नहीं मानता था। अपनी सीमित वैभव की दुनिया अच्छी थी और सुहाती भी थी पर ऐसे लोगों के लिए वह जो कुछ भी करता था उसें कर्तव्य और गहरी संवेदना रहती है।

फ्रैंकलिन विशिष्ट थे। उनकी उम्र सत्तर की थी और बीस वर्षों से संपर्क था। वे कारीगर-मजदूर थे और शहर की सैकड़ों अट्टालिकाएं उनके हाथों की कला का अंजाम थीं। वे अकेले थे और उनका परिवार उनसे तालमेल न बिठा पाने की वजह से अलग हो गया था। वह समय के एक खास दौर में हुआ था और उस दौर में बूढ़े बढ़ गए थे। वे होश सँभालने की उम्र से मजदूरी करते आ रहे थे। यह सब तो था, लेकिन उनके साथ सितार भी थी। वे चित्रकारी में गहरी रुचि रखते थे और राजनीति को परहेज की तरह नहीं लेते थे। वे काले रंग के थे और पसीने से चमकते रहते थे। ईटों और गारे के बीच उनकी करनी ठीक वैसी ही चलती थी जैसे उनकी उंगलियां सितार के तारों पर। वे इस उम्र में संघर्षों का जैसे एक इतिहास थे। पिछले पचास वर्षों में अच्छी जंदगी के लिए वे बहादुरी से हर तकलीफों से गुजर गए थे और यह भी कि सितार बजाने और ईंट जोड़ने में वे भेद नहीं करते थे। वे कहते इनकी बुनियाद में आदमी होता है, उसके हाथ होते हैं, इसलिए फर्क नहीं करना चाहिए।

उनके प्रति गिरिश के आकर्षित होने के ऐसे अनेकानेक कारण थे। बीस वर्षों के लंबे संपर्क में उनकी अनगिनत विशेषताओं से वह परिचित हुआ था। सामान्य लोगों में यह कहाँ होता है कि किसी वक्त पर, एक मुकम्मल पैसे पाने पर, नए काम स्थगित कर दें, और पहाड़ों और पेड़ों के बीच वक्त गुजारें। पर यह सब फ्रैंकलिन के साथ न था। गिरीश को उनके जीवन के लगभग सारे तथ्य ज्ञात थे। उनका व्यक्तित्व पारदर्शी था। लेकिन उस वक्त वे जो कुछ बता रहे थे वह अपूर्व था और गिरीश को उस दिन तक इसकी कोई भनक नहीं थी। वे जो बता रहे थे उस पर विश्वास करना भी नामुमकिन था। वे अपनी आँखों के धुंधलाने की शिकायत अक्सर करते रहे थे पर इतनी नहीं कि वे कुछ का कुछ देखती हों। वह हरदम मजबूत रहते थे और सीधी रीढ़ वाले थे। पर उस वक्त जैसा चेहरा उनका था उसमें एक निराशा झलक रही थी और वह बदल रहा था।

और यही सब देखकर गिरीश घबरा गया था। इसलिए और भी कि वे जो बता रहे थे वह असंभव था। वे जिसके बारे में बता रहे थे वह एक साँप था कुछ और नहीं। वे धाराप्रवाह काफी देर तक बोलते चले गए थे। फिर किसी क्षण अधिक बोलने से उनकी सांसें उखड़ गई थीं और अंततः वे रुक गए थे।

अकबकाए हुए गिरिश ने सिर्फ इतना पूछा था–''ऐसा कब से है।'' उसके लहजे में एक संदेह था।

लहजे को फ्रैंकलिन पहचान गए थे। एक खोखली और संक्षिप्त हंसी का स्वर न जाने क्यों बाहर आया था, फिर उन्होंने एक रहस्यमयी हुंकार के बाद कहना शुरू किया था–''यह आजकल में घटी बात नहीं है। वह मेरे साथ तीस-पैंतीस वर्षो से हैं और लाख कोशिशों के बाद जाता नहीं है। वह कभी-कभार ही गायब होता है। मेरा कोई भी हथियार उस पर काम नहीं करता। उसके भोजन के बारे में मैं नहीं जानता। मैंने उसे कभी खाते नहीं देखा। लेकिन एक अजीब तरीके से मेरा राशन कम पड़ता रहता है। वह रात के गहन सन्नाटे में छप्पर की म्याली से नीचे उतरता है जब मैं थकान से मिली गहरी नींद में होता हूँ। बर्तनों को लुढ़कने-सरकने की कर्कश आवाजें मेरी नींद को छन्न-भिन्न कर देती है। लेकिन मेरे जागते ही आवाजें लुप्त हो जातीहै। वह एक चमक के साथ पहले जैसा ही बर्तनों पर सरकता रहता है पर आवाजें नहीं होती। उसे मेरी नींद पर शायद गुस्सा आता है। मेरी आँखों के सामने वह मेरी हर चीज की सुध लेता है। उसकी हर हरकत किसी धूर्त मालिक के मुशटंडे पहरेदार की तरह होती है। लेकिन मैं एक छोटी सी नींद में भी सपना देख लेता हूँ। वह सपना बहुत अच्छा है। मैं उसे पूरा देखना चाहता हूँ, वह हमेशा अधूरा रह जाता है।''

जब वे दोबारा रुके तो गिरीश काफी हद तक संयत हो चुका था। उसका दिलो दिमाग फ्रैंकलिन द्वारा बताई गई घटनाओं पर विश्वास करने को कतई तैयार नहीं था। वह उस वक्त संकोच के दबाव में था अन्यथा ऐसे अवसरों पर एक उन्मुक्त ठहाका वह अवश्य लगाता। बीसवीं शताब्दी के छोर पर भला ऐसी बातों पर कौन विश्वास करेगा? उसे मालूम था कि ये बातें फ्रैंकलिन ने कोई सनसनी पैदा करने के लिए नहीं कही थीं, वे अपनी बात पूरे विश्वास से कहते नजर आ रहे थे। लेकिन उसके लिए उन्हें समझना भी मुश्किल था। ले-देकर उसे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर ही संदेह हो रहा था और इसीलिए वह उनके प्रति स्वाभाविक रूप से चिंतित हो गया था। उसे यह मालूम था कि फ्रैंकलिन के शरीर का मेहनत से सख्त हो गया बाहरी आवरण भीतरी तहों में भी ठीक वैसा ही नहीं था। जीवन के प्रति सच्ची चिंताओं का जो घोल उनके मस्तिष्क में बनता रहता था वह रगों और स्नायुओं में हमेशा तरलता के रूप में बहता रहता था और नमी बरकरार रहती थी। इसी नमी को पहचानना सभी के लिए आसान नहीं रहता। लेकिन न जाने कैसे और किस तरह गिरीश उसे पहचानने लगा था। उनके रिश्तों में एक तार यह भी था। वह जानता था कि यह बहुत नाजुक भी हो सकता है इसलिए उसने दूसरी बात कहने के पहले काफी समय चुप्पी में काटा, और पानी का एक गिलास भरकर फ्रैंकलिन को दिया। वे धीरे-धीरे पानी पीते रहे। खाली गिलास जब उन्होंने रखा तब भी गिरीश के पास कोई बड़ी बात नहीं थी उनसे कहने के लिए। लेकिन कुछ कहना अनिवार्य जानकर एक हिचक के साथ उसने कहा–''आप घर बदल दीजिए, कई बार इससे समस्या सुलझ जाती है।''

कुछ सोचकर वह बीच में रुका और उन्हें सामान्य कर देने की गरज से मजाकिया लहजे में कहा–''लोगों की मान्यता है कि जहां कोई खजाना होता है, वहीं पर सांप इस तरह रहते हैं...।''

वह अपनी बात शायद और आगे कहीं ले जाकर खत्म करता परंतु इतना सुनते ही फ्रैंकलिन बेतहाशा हँसने लगे। गिरीश ने महसूस किया उस हंसी में किंचित् नाराजगी झलक रही थी। क्षण-भर बाद वे अकस्मात् रुके फिर कहा–''क्या आपको मालूम है मैंने इस बीच कितनी बार घर बदले हैं? कई बार, लेकिन उसने मेरा पीछा छोड़ा नहीं। दूसरी बात वहाँ कोई खजाना होता तो मैं इस हालत में क्यों रहता?''

वे इतना कहकर काफी देर तक प्रश्नवाचक निगाहों से गिरीश को देखते रहे, पर गिरीश से तत्काल कोई प्रतिक्रिया न पाकर कुछ स्मरण करते हुए कहा–''आप इस बात पर हंस सकते हैं, पर मुझे यकीन है कि वह पैसों का लालची जरूर है। मुझे याद

आया, एक बार एक मकान मालिक ने मुझे एक बड़ी रकम उसके मकान में लगाने इसलिए दे दी थी कि वह कहीं बाहर जा रहा था। उस रात मैँ बहुत बेचैन रहा। मेरी पैंट की जेब में वे पैसे थे। बाद में मेरी समझ में नहीं आया कि मेरे कमरे में एक भूचाल सा क्यों आया हुआ है। वह बहुत तेजी से सरसरा रहा था। उसमें अजीब बेचैनी थी। वह कोने-कोने घूम रहा था। उसका रंग गाढ़ा नीला हो रहा था। दीवार पर एक खूंटी से मेरी पैंट टंगी थी। एकबारगी जमीन पर सरकते हुए वह मेरी लटकती पैंट के नीचे ठिठका, फिर अचानक लंबा होता चला गया और दूसरे पल उसका अगला हिस्सा ऊपर पैंट की ओर उठता गया। देखते-ही-देखते उसका मुँह पैंट की जेब में समा गया। फिर मेरी पैंट को वह बड़ी देर तक झकझोरता रहा, और अचानक शिथिल पड़ गया। कुछ देर बाद, जैसे किसी संतोष के मिल जाने पर, वह आराम से अपनी जगह पर पहुँच गया। आप इसे भी बिल्कुल नहीं मानेंगे कि इस बीच उसने मुझे एक बार भयानक गुस्से से देखा भी था।''

वे पल-भर के लिए रुके। शायद मुँह सूख गया था। फिर अपने होंठों पर जीभ फेरते हुए दोबारा कहना शुरू किया-''इस घटना के बाद लेकिन दूसरे दिन जब मैंने अपनी पैंट की जेब में हाथ डाला तो वहाँ पैसे नहीं थे। मैंने देखा वह म्याली पर था और मस्ती में हंस रहा था। वह पैसों को चट कर जाता है,और आप कह रहे हैं वह खजाने के पास रहता है। उन पैसों के एवज में मुझे मकान मालिक की कई महीने बेगार करनी पड़ी।''

उन्होंने अपनी बात समाप्त करके एक लंबी ठंडी साँस ली और अपना सिर झुका लिया।

गिरीश अब उनकी बातों से ऊब गया था। लेकिन उसे भरसक छुपाते हुए उसने कहा-''मैं यह सब नहीं मानता, ऐसा कैसे हो सकता है? आपको जरूर कोई भ्रम है। आपका बुढ़ापा है और एकदम अकेले रहते हैं इसलिए आपको ऐसी अजीब, झूठी और बेतुकी चीजें दिखती है। असल में आप जरूरत से ज्यादा सोचते भी हैं। अधिक तनाव से भी यह होता है।''

फ्रैंकलिन मुस्कुराए और कहा-''हो सकता है, आपके लिए यह झूठ हो, लेकिन मेरे लिए सारी बातें सच हैं, एकदम सौ फीसदी। मुझे विश्वास है, कोशिश करें तो आप भी यह सब देख सकते हैं।''

फ्रैंकलिन ने जिस विश्वास से अपनी अंतिम बात कही गिरीश को बहुत आश्चर्य हुआ लेकिन फिर भी उसने जोर देकर कहा-''असंभव! एकदम असंभव, मैं नहीं

मानता कि मुझे ऐसी कोई चीज दिख सकती है। मेरी मानसिक स्थिति बिल्कुल ठीक है। असल में आप मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गए हैं। मेरा आग्रह है कि आप कुछ दिनों के लिए कहीं चले जाएं। यदि हर्ज न हो तो यहां, मेरे पास आकर रहें। शायद आपको किसी डॉक्टर से भी मिलना चाहिए।''

गिरीश के सारे सुझाव फ्रैंकलिन को बचकाने और किंचित् अपमानजनक लगे। लेकिन उन्होंने इसे प्रकट नहीं होने दिया, हालांकि उन्हें गिरीश से यह उम्मीद भी नहीं थी कि वह उनकी बातों पर विश्वास नहीं करेगा। लंबे समय तक विचारने के बाद ही उन्होंने उससे सब कुछ बताया था। अपने विश्वास की असफलता पर वे कुछ देर सोचते रहे और चुप रहे आए। पर शायद गिरीश पर उनका विश्वास पूरी तरह डिगा नहीं था इसलिए वे अचानक बोले-''आप क्यों नहीं मेरे साथ चलकर मेरे घर कुछ दिन रहते। आप स्वयं ही कुछ दिनों में उसे देख लेंगे। अगर तब भी वह आपको नहीं दिखा तो मैं यह मान लूँगा कि मैं मानसिक रूप से अस्वस्थ हो गया हूँ।''

गिरीश ने महसूस किया कि यह फ्रैंकलिन का प्रचलित विनम्र लहजा नहीं है। गहराई में कहीं कोई चुनौती है। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह फ्रैंकलिन का यदि आदर करता है तो इसका यह मतलब तो नहीं कि उनकी इस तरह की बकवास को सच मान ले। असमंजस की स्थिति में वह उद्विग्न हो गया था। बाहर तेज बारिश शुरू हो चुकी थी और उसका शोर उसी तीव्रता से कमरे में प्रवेश कर रहा था। गिरीश कुछ सोच ही रहा था कि आसमान में बिजली चमकी और भीषण गर्जन के साथ पूरा कमरा तीव्र रोशनी से नहा गया। तभी एक अजीब बात हुई। न चाहते हुए भी गिरीश के मुँह से निकला-''ठीक है, यही सही। आप कहते हैं तो यह करके भी देख लेते हैं। मैं कल से शाम को दफ्तर से लौटने पर सीधे आपके घर पहुँचकर तब तक रहूंगा, जब तक वह मुझे नहीं दिख जाता। लेकिन मैं एक बार फिर कहता हूँ कि आपकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है।''

यह सुनकर फ्रैंकलिन बहुत खुश हुए और बिना कुछ कहे एक झटके से उठे और तेज बारिश के बावजूद बाहर निकल गए। गिरीश हतप्रभ सा खड़ा रह गया। वह जब तक उन्हें रोक पाता तब तक वे तेज कदमों से पानी से सराबोर सड़क पर पहुँच चुके थे। गिरीश को लग रहा था कि बारिश और बढ़ेगी। वह दरवाजा बंद करके जब वापस कमरे में आया तो उसे अपना गला सूखता हुआ महसूस हुआ। उसने किचन में पहुँचकर फ्रिज से पानी की एक बोतल निकाली और गटागट पूरी बोतल एक साँस में पी गया। न जाने क्यों उसका पेट गर्म हो रहा था और भीतर पित्त उछालें भर रहा था। उसके लिए

यह नया अनुभव था। संभवत: वह अंदरूनी तौर पर खीजा और चिढ़ा हुआ था। फ्रैंकलिन को गए काफी देर हो चुकी थी और अब उसे किसी सीमा तक यह अफसोस हो रहा था कि उसने नाहक फ्रैंकलिन की बात को एक शर्त की तरह मान लिया था। वह खुद की समझदारी पर अचंभित था और हो गई बेवकूफी पर पछता रहा था। काफी देर तक वह एक ऊहापोह की मन:स्थिति में रहा। लेकिन अब विरुद्ध चले जाने का कोई चारा उसके पास नहीं था। थक-हारकर वह खुद को आने वाली स्थितियों के लिए तैयार करने लगा। लेकिन यह दिलचस्प था कि इसके बाद भी वह अपने आपको स्थिर-सकाग्र नहीं कर पा रहा था।

दूसरे रोज सुबह-सुबह उसने घर के तमाम लोगों को यह सूचना दे दी कि वह आज से कुछ दिनों के लिए फ्रैंकलिन के घर रहेगा। घर के लोगों को कुछ समझ न आया। उन लोगों ने आश्चर्यसहित न जाने कितने प्रश्न उससे किए, पर जवाबों को वह टाल गया। वह जानता था कि यदि उसने सही-सही कारण बताया तो लोग उस पर हंसेंगे। इसलिए उसने खुद के लिए झक्की या सनकी जैसी तोहमतों को चुपचाप मान लिया और दफ्तर ले जाने वाले ब्रीफकेस में ही कुछ कपड़े और दूसरे आवश्यक सामान लेकर वह दफ्तर के लिए निकल गया।

दफ्तर से फारिग होकर जब वह देर शाम गंदी और बंहद कुंद गलियों को पार करता फ्रैंकलिन के घर पर पहुँचा तो पानी नहीं गिर रहा था और उमस बढ़ गई थी। वह पसीने-पसीने था। फ्रैंकलिन अपने दरवाजे पर उसका इंतजार ही कर रहे थे। कोई तीखी दुर्गंध उसकी नाक में समा रही थी और वह रुमाल रखकर उससे बचने की असफल कोशिश कर रहा था। वह जब फ्रैंकलिन के बिल्कुल करीब पहुँचा तो वे मुस्कुराए। इस क्रिया में उनके दाँत दिखने लगे थे और आँखें बाहर निकल आई थीं। गिरीश को न जाने क्यों वे पहली बार कुछ-कुछ खौफनाक नजर आए। उसने अनजाने डर से नजरें हटा लीं।

फ्रैंकलिन ने सिर्फ इतना कहा-''आइए, मैं आपका इंतजार ही कर रहा था।'' फिर वे दोनों चले गए और बाहर पूरी तरह अंधकार में डूब गया।

अंदर एक बहुत पीला और जर्जर रोशनी वाला बल्ब जल रहा था। वहाँ सीलन और मरे चूहे की दुर्गंध समाई हुई थी। वह काफी बड़ा इकलौता कमरा था और वहाँ कोई खिड़की नहीं थी। काफी हद तक वह खाली था। सिर्फ एक कोने में दो खटियां बिछी हुई थीं और वहीं पास में कुछ बर्तन, थोड़े ढंके और थोड़े उधड़े पड़े हुए थे। उसी कोने पर कई खंडों वाला एक बड़ा आला था, जिसमें कुछ एल्यूमीनियम के पुराने डिब्बे

बेतरबीत बिखरे थे। पानी का एक काई लगा घड़ा और दो बाल्टियाँ भी वहीं थे। इन सबसे दूर दूसरे कोने में एक सितार दीवार से टिकी हुई थी। उससे थोड़ा हटकर एक आदमकद आईने का टुकड़ा तिरछा होकर रखा था। उस पर लंबे समय से धूल की गहरी पर्त जमा थी।

गिरीश की नजरें चारों ओर घूम रही थीं। पूरा कमरा एक अजायबघर का प्रभाव पैदा कर रहा था। कोई खड़खड़ाती आवाज बार-बार खुद को दोहरा रही थी। असल में एक बहुत पुराना और वजनदार पंखा अपनी सबसे कम गति में घूम रहा था और उसके घिस चुके बेयङ्गरग आवाज कर रहे थे। पंखा म्याली से लटका था। गिरीश की नजर जब वहाँ पड़ी तो वह चौंका। उसे अचानक कुछ याद आया, फ्रैंकलिन ने बताया था कि वह सांप अक्सर म्याली पर लिपटा रहता है। पर उस वक्त वहाँ कुछ नहीं था, अलबत्ता धूल चिपकी होने के बावजूद काली म्याली काफी हद तक चमक रही थी। उसे खुशी हुई यह देखकर कि वहाँ सांप नहीं था। वह निश्चिंत हो गया और उसने एक हल्के व्यंग्य सहित फ्रैंकलिन से अचानक कहा-''यहाँ तो कुछ नहीं है, कहाँ गया आपका वह सांप?''

फ्रैंकलिन ने एक रहस्यमयी मुस्कान के साथ जवाब दिया-''बेसब्र मत होइए, इतनी जल्दी नहीं दिखेगा वह आपको।''

उनकी बात सही थी कि कुछ मिनट ही गुजरे थे गिरीश को वहाँ पहुँचे हुए। लेकिन उसे काफी हद तक यकीन हो चला था कि फ्रैंकलिन की दिमागी हालत वाकई ठीक नहीं है। उसने उनकी बात पर कोई प्रतिक्रिया नहीं की और चुपचाप खटिया पर बैठ गया। उसे पक्का विश्वास हो गया था कि फ्रैंकलिन की बातें सच नहीं होने वालीं।

उसके काफी देर तक चुप रहने पर फ्रैंकलिन अपने कामों में लग गए थे। उन्होंने इतनी देर में स्टोव जलाकर उस पर एक पतीला चढ़ा दिया था जिसमें तीन-चार बड़े-बड़े आलू उबल रहे थे।

लगभग एक घंटा गुजरा था। निहायत बे-स्वाद भोजन करने के बाद गिरीश जब एक बेहद गंदी और पतली तकिया अपने सिरहाने रखकर लेटा तो मच्छरों की तेज भनभनाहट कमरे में गूँज रही थी। काली चमकती म्याली खप्परों के नीचे ठीक उसकी नजरों के सामने थी। वह टकटकी लगाकर उसे देख रहा था। वहाँ अब भी सुनसान था। फ्रैंकलिन दूसरी खटिया पर लेटे थे और गिरीश को बहुत मद्धिम प्रकाश की वजह से समझ नहीं आ रहा था कि वे कहाँ देख रहे हैं। दूर कहीं से ट्रेन के सरकने की आवाज आ रही थी। गिरीश ने अपना बायाँ हाथ उठाकर गौर से अपनी रिस्ट वॉच पर नजर

डाली। शायद छोटी सुई बारह पर पहुँच गई थी। बारिश के मौसम के बावजूद उस दिन सुबह से बिल्कुल पानी नहीं गिरा था और पहले की अपेक्षा उमस ज्यादा बढ़ी हुई थी। शरीर चिपचिपा रहा था और पंखे की गर्म हवा बेअसर थी। पिछले दिन से लेकर उस दिन तक गिरीश ने काफी कुछ सोच डाला था और फ्रैंकलिन की बातें किसी कोने से विश्वसनीय नहीं लगी थीं। वह जरूर अधिक सोचने से तनावग्रस्त था। एक गहरी थकावट वह महसूस कर रहा था और बेहोशी जैसी तंद्रा में झूल रहा था और बार-बार झटके से जाग जाता था। फिर तत्काल उसकी नजर म्याली पर पड़ती थी। लेकिन वहाँ कुछ नहीं पाकर वह आँखें मूँद लेता था।

अभी एक मुकम्मल झपकी वह ले भी न पाया था कि मच्छरों ने उसके शरीर पर जगह-जगह काटना शुरू कर दिया। उनसे बचने के लिए उसने अपने शरीर पर जगह-जगह मच्छरों को मारना शुरू किया, पर मच्छरों का आक्रमण जारी रहा। उसकी झपकी भी लोप हो गई और शरीर खुजलाने लगा। उसने जब कुछ पूछने की गरज से फ्रैंकलिन की ओर देखा तो वे सो चुके थे। उनके महीन खर्राटों की आवाज उसे सुनाई पड़ रही थी। बल्ब की रोशनी इतनी कमजोर थी कि उसे रात में भी बुझाया नहीं जाता था इसलिए वह उस वक्त भी जल रहा था। गिरीश उठा और उसने कुछ खोजना शुरू कर दिया। पर बहुत देर की कोशिशों के बाद भी उसे किसी तरह का मस्क्रिटों मैट नहीं मिला। वह बेचैन हो गया। बाहर सड़क पर लगातार कुत्ते भौंक रहे थे। वह काफी देर तक लाचार सा खटिया पर बैठा रहा। उसकी बेचैनी खीज में बदल रही थी और अब मच्छर जागृत हालत में भी काट रहे थे। उसे रह-रहकर एक प्रश्न घेर लेता था कि कहीं उसने फ्रैंकलिन के घर आकर मूर्खता तो नहीं कर दी? फिर उसे यह सोचकर तसल्ली मिलती कि यदि उनकी मानसिक हालत उसके वहाँ रहने से ठीक होती है तो बुरा क्या है। हालाँकि उसे यह महसूस भी हो रहा था कि वह उसके जीवन की सबसे बुरी रात है। उसकी नजर अचानक फिर म्याली पर गई, वह अब भी खाली थी। नींद का अंत तक पता नहीं था।

वहाँ सुबह जल्दी हो गई थी। रह-रहकर मुर्गे बोल रहे थे। कोई मुर्गा ठीक दरवाजे के सामने बोला था। तेज आवाज से गिरीश हड़बड़ाकर जाग गया था। सुबह के साढ़े आठ बजे थे। उसे याद आया, वह रात को अपने-आप नहीं सोया था बल्कि झपकी टूटने के बाद भारी तकलीफ में वह खटिया पर बैठा था। फिर वह सो कैसे गया, कुछ याद नहीं आ रहा था। उसने याद करना छोड़कर चारों ओर देखा, कमरे में उस वक्त कोई नहीं था और दरवाजा खुला था। धूप का एक बड़ा टुकड़ा अंदर जमीन पर फैला

था। वह खटिया से उठने को ही था कि फ्रैंकलिन तभी बाहर से अंदर आए और उसे जागा देखकर कहा-"रात काफी अच्छी नींद आपको।" उनके हाथ में पानी से भरी बाल्टियाँ थीं।

वह तिलमिला गया उनकी बात सुनकर कि उसे अच्छी नींद आई। अपनु गुस्से को उसने दबा लिया फिर भी तुर्शी से उसने कहा-"आप भी खूब मजाक करते हैं। रात भर मुझे एक पल नींद नहीं आई और कह रहे हैं अच्छा सोया...।"

वह शायद कुछ और भी बोलता पर बीच में फ्रैंकलिन ने आश्चर्य सहित टोका-"क्या रात में आपने उसे देख लिया?"

हालाँकि फ्रैंकलिन बिल्कुल सहज थे पर अब वह अपने आपको दबा नहीं सका और अकारण गुस्से में बोला-"मैं उसे देखने यहाँ नहीं आया हूँ मुझे सिर्फ आपकी तकलीफ का ख्याल है। आप समझते क्यों नहीं कि वह है ही नहीं तो क्यों दिखेगा?"

फ्रैंकलिन चुप हो गए। उनके चेहरे से मगर निराशा झलक रही थी। कोई बात उनकी जुबान तक आते-आते लौट गई थी।

उस पूरे दिन फिर उन लोगों के बीच कोई बात नहीं हुई। वे लोग अपने-अपने कामों पर समय के पहले ही निकल गए।

गिरीश का मन उस दिन किसी काम में नहीं लगा। वह कुछ भी अनाप-शनाप करता रहा। उसकी उखड़ी मन:स्थिति में जब वह शाम को लौट रहा था तो उसे गुजरी रात याद आ रही थी। उसका प्रभाव अभी भी ताजा बना हुआ था। नींद न होने से गहरी थकावट थी और पैर लड़खड़ा रहे थे। उसके दफ्तर से फ्रैंकलिन का घर दूर नहीं था यह सोचकर वह अपना स्कूटर भी आते वक्त घर से लेकर नहीं चला था और अब अपनी इस मूर्खता पर पछता रहा था। बार-बार इच्छा हो रही थी कि वह रास्ता बदल दे और अपने घर की ओर निकल जाए। लेकिन क्या वह ऐसा कर सकता है, या ऐसा करना बेईमानी न होगी। ऐसे अनेक प्रश्न उसके मन में उठ रहे थे। वह इतना कमजोर क्यों हो रहा था उसे स्वयं समझ नहीं आ रहा था। एक दिन ही गुजरा था और उसकी यह हालत थी। आनेवाले असीमित दिनों को वह कैसे काटेगा यह सोचकर वह बेहद परेशान था उसने अपने आपको एक झटका दिया और सोचने से अपना ध्यान हटा दिया। फिर उसकी चाल तेज हो गई, जबकि पहले वह लड़खड़ा रहा था। वह भूलना चाहता था।

सड़ांध मारती लंबी गली को पार करता हुआ जब वह फ्रैंकलिन के घर पहुँचा तो पूरी तरह बेदम हो चुका था। वे पहले से ही दरवाजे पर खड़े थे। नजरें मिलते ही उसने

एक अजीब बात महसूस की। उनका चेहरा उसे बेहद कुरूप नजर आया। वे पहले से ज्यादा काले नजर आ रहे थे। उसकी समझ में नहीं आया कि इसके पहले ये विकृतियां उसे क्यों नजर नहीं आई कभी भी। उसने अपने अंदर एक सिहरन सी महसूस की और नजरें हटाकर, बिना कुछ बोले अंदर आ गया। वही मटमैली, पीली रोशनी कमरे में टिमटिमा रही थी। अंदर कमरा गर्मी से उबल रहा था। बारिश विगत दिनों से न जाने क्यों रुकी हुई थी। उसके तन-मन को किसी भी तरह आराम नहीं मिल रहा था।

फ्रैंकलिन न जाने कब अंदर आकर अपने रोजमर्रा के काम में लग गए थे। वे सुबह की तरह ही गुमसुम थे। वह खटिया पर सोचता हुआ बैठा था और जलते हुए स्टोव पर उसकी निगाहें जमी थीं। लेकिन ध्यान कहीं और था। तवा स्टोव पर चढ़ाने की आवाज पर वह चौंका। फ्रैंकलिन पास में बैठे थे और तवे के गर्म होने का शायद इंतजार कर रहे थे। इस बीच उन्होंने कई लोइयाँ बना ली थीं और अभ्यस्त हाथों से रोटियां बेल रहे थे। फिर जब तवा गर्म हुआ तो उन्होंने रोटियां सेंकनी शुरू कर दीं। एक कपड़ा उनके हाथ में था जिससे वे तवे पर सिंकती रोटी को गोल-गोल घुमा रहे थे और वह रोटी फूलने लगती थी।

सब कुछ, जिनके लिए वह वहाँ था, बहुत अविश्वसनीय बातें थीं लेकिन फिर भी उसे कोई इंतजार सता रहा था। दहशत जैसी चीज उसके अंदर शुरू से नहीं थी लेकिन वह बार-बार उस म्याली पर नजर डाल ही देता था जहाँ सांप के रहे आने की बात कही गई थी। वह अपनी कल्पनाशक्ति से भी कोई रंग, रूप या स्थिति उसे दे नहीं पाया था। न ही यह समझ पाया था कि अगर वास्तव में ऐसा हो भी तो वह क्या हो सकता है?

यह सब सोचते-सोचते कोई हल न मिलने से वह काफी विचलित होता जा रहा था। वह उस घड़ी अपने में नहीं था और छटपटाहट में उठकर टहलने लगा था। कमरे में तेज चलते पंखे की आवाज के अलावा बाहरी तौर पर सब कुछ शांत था। फ्रैंकलिन रोटी सेंकते रहने के बावजूद उसे देख रहे थे। अचानक बगैर किसी भूमिका के उन्होंने गिरीश से कहा-''आप चाहें तो अपने घर चले जाएं। मैं देख रहा हूँ आप काफी बेचैन हैं। शायद आपका मन यहाँ नहीं लग रहा है। आप निश्चिंत रहें मुझे कतई बुरा नहीं लगेगा।''

''नहीं-नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। जगह बदलने से थोड़ा खराब तो लगता ही है। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। आप मेरे लिए परेशान न हों,'' उसने तुरंत खुद को किसी हद तक सँभालते हुए कहा। फ्रैंकलिन काफी देर तक उसे गौर से देखते रहे और बिना आगे

बात किए फिर से रोटी सेंकने लगे।

गिरिश अपनी स्थिति पर चिंतित हो गया था। ऐसा कौन सा पहाड़ उस पर टूट पड़ा था कि वह ऐसा व्यवहार करने लगा था, उसके लिए यह समझना कठिन न था। वह अपने व्यवहार से शर्मिंदगी भी महसूस कर रहा था। जबकि वह अपनी ऊब को भरसक छिपाने की कोशिश कर रहा था। उसे अपने घर की याद आ रही थी। वह बहुत दूर नहीं था न ही अतीत में, पर याद आना कुछ इसी तरह का था। उसे फिर याद आया, अपने घर को छोड़े छत्तीस घंटे गुजर गए थे।

थोड़ी देर बार फ्रैंकलिन ने उसे पुकारा-''आइए खाना तैयार है।''

वह चौंका और यंत्रवत् जमीन पर बिछी दरी पर आकर बैठ गया। वहाँ चीनी मिट्टी की पुरानी हो चुकी प्लेटों में मोटी-मोटी रोटियाँ रखी थीं और किनारों पर जलकर काली हो गई कोई अनजानी सब्जी।

पहला कौर मुँह में डालते ही उसका स्वाद बुरी तरह बिगड़ गया। तेज लाल मिर्च की जलन और सरसों के तेल की तीखी गंध मुँह में समा गई। एक पल को उसकी अंतड़ियाँ उसे बाहर आती लगीं। लेकिन उसने जबर्दस्ती चबाना शुरू कर दिया। भूख उसे तेज लगी थी हमेशा की तरह, पर भूख में कुछ भी खा लेना उसकी आदत नहीं थी। लंबे अर्से से वह रिफाइंड तेल में बना भोजन करता आ रहा था। बचपन में तो शुद्ध घी का सेवन ही घर में होता था। आने वाली उल्टी को उसने किसी तरह नियंत्रित किया। इस कोशिश में लेकिन उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह जल्दी-जल्दी कौर निगलने लगा ताकि बुरे स्वाद और उबकारी से उसे शीघ्र निजात मिले। एक क्षण को रुककर उसने फ्रैंकलिन की तरफ देखा। वे बहुत मनोयोग से भोजन कर रहे थे और उसमें एकदम एकाग्र थे। उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसा भोजन भी कोई इतनी तन्मयता से खा सकता है। जबकि मोटी कड़ी रोटियाँ चबाते-चबाते उसके मसूड़ों में दर्द हो रहा था। कड़ी रोटी का एक टुकड़ा भी मुँह में चले जाने पर पर पत्नी को डाँटने लगता था लेकिन वह बिना नाराज हुए कड़ी रोटी हटाकर तुरंत मुलायम रोटी उसकी थाली में रख देती थी। उसे यह आद आते ही रोटियाँ और कड़ी लगने लगीं।

ढाई-तीन रोटियाँ बड़ी मुश्किल से निगलने के बाद वह उठने को ही था कि एक मधुर बेताल ध्वनि ने उन दोनों को चौका दिया। वह ठिठक गया। फ्रैकलिन तेजी से उस ओर पलटे जिस ओर उनकी सितार रखी हई थी, फिर हड़बड़ाते हुए गिरीश से कहा-''देखिए-देखिए, वह वहाँ है, देखिए, देखिए भाग रहा है वह।''

गिरीश थोड़ा घबराया पर लपककर सितार के पास पहुँचा। पर आश्चर्य कि वहाँ कुछ नहीं था। एक बार उसने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाई और अविश्वासपूर्वक कहा–''कहाँ? यहाँ तो कहीं कुछ नहीं है।'' वास्तविकता यही थी कि उसे कुछ नहीं दिखा था।

''लेकिन आपने सितार की आवाज तो सुनी थी, वहाँ वही था। शायद वह किसी कारण गुस्से में था। अपना गुस्सा प्रकट करने के लिए वह ऐसी हरकतें करता रहता है। लेकिन यह बड़ी अजीब बात है कि वह आपको नहीं दिख रहा जबकि वह अभी भी वहीं पर है, सिर्फ ध्यान से देखने की जरूरत है।''

फ्रैंकलिन अभी बोल ही रहे थे कि दीवार से लंबवत् टिकी सितार अचानक भरभराकर धराशायी हो गई और वहाँ धूल का एक छोटा सा गुब्बारा उठा और धीरे-धीरे जमीन पर बैठने लगा। फिर दूसरे सेंकेंड पर लाइट गायब हो गई। गिरीश ने तभी महसूस किया जैसे कोई चीज तेजी से जमीन पर सरक रही है। उसके रोंगटे खड़े हो गए लेकिन वह समझ न सका कि क्या है वह सबकुछ जो अभी-अभी गुजर गया। उसे जब कुछ भी नहीं दिखा तो वह विश्वास कैसे कर सकता था। उसने खुद को ढीला छोड़ते हुए कहा–''बेकार की बात, कोई चूहा भी तो हो सकता है। साँप होता तो अवश्य दिखता, वह लंबा होता है, पलक झपकते गायब नहीं हो सकता।''

उसने अपने तई सही बात कही थी लेकिन यह भी एक सच था कि उसने कोई चूहा भी नहीं देखा था। संभवत: इसलिए उसे पहली बार दहशत का अहसास हुआ था। उस वक्त गर्मी अधिक नहीं थी पर वह पूरी तरह पसीने से भीगा हुआ था। उसने अपने सारे कपड़े उतार दिए और सिर्फ अंडरवियर में खटिया पर लेट गया। नींद एक मूर्च्छा की तरह उस पर सवार हो रही थी लेकिन एक बेहद पतली, पुरानी जर्जर हो चुकी दरी के कारण खटिया की रस्सी उसके नंगे बदन पर बुरी तरह गड़ रही थी। वह राहत पाने के लिए करवटें बदल रहा था। नजर के सामने छप्पर की म्याली थी और वह साँप के दिख जाने की आशंका से बार-बार वहाँ देख रहा था। फिर न जाने क्यों किसी पल उसे लगा जैसे कोई उसकी रीढ़ को जकड़ रहा है। वह छटपटाकर उठ बैठा। लाइट वापस आ गई थी।

फ्रैंकलिन ने उसके अविश्वास को देखकर उससे फिर आगे कुछ नहीं कहा था और वे भी लेट गए थे। वे बहुत निराश थे और बीड़ी के लंबे-लंबे कश ले रहे थे। गिरीश की नजर जब उन पर पड़ती तो उनका चेहरा धुएँ के पीछे ढका था। उसे यह देखकर अच्छा लगा। यह अजीब बात थी कि वह उनके चेहरे को देखने से कतराने

लगा था।

उस रोज मच्छरों की भनभनाहट पिछले दिन की अपेक्षा बढ़ी हुई थी। उसे याद आ रहा था कि अब तक की अपनी जिंदगी में वह इस तरह कभी नहीं सोया था। किसी मुसाफिरखाने में नहीं, किसी सराय में नहीं, न ही किसी रेलवे प्लेटफार्म पर। उसके पास हमेशा अपना साफ-सुथरा बिस्तर होता था। आज भी उसने अपने घर में सबसे आरामदायक अपने शयनकक्ष को बनाकर रखा है।

लेकिन वहाँ कोई चारा उसके पास नहीं था। नींद आने के बाद भी नहीं आ रही थी। तरह-तरह के ख्याल आ रहे थे। एक बार उसने यह भी सोचा कि वह कल बाजार से अपने लिए कए मच्छरदानी ले जाएगा। मगर दूसरे क्षण लगा कि एक फ्रैंकलिन के लिए भी लाना चाहिए। पर उसने अपने इस विचार को भी तुरंत खारिज कर दिया। उसे पक्की तौर पर यकीन था कि फ्रैंकलिन उसे ऐसा नहीं करने देंगे। उससे उनके आत्मसम्मान को ठेस लगेगी। दूसरी तरकीब उसके दिमाग में बहुत सोचने पर भी नहीं आई। वह घंटों सोचता रहा। फ्रैंकलिन के खर्राटे सुनाई पड़ने लगे थे। ईश्वर को उसने कभी याद नहीं किया था इसलिए नींद लाने के लिए उसने सौ से एक तक उलटी गिनती गिननी शुरू कर दी और अपनी आँखों को कसकर मूंद लिया।

गिनती बिगड़ने पर बार-बार दोहराते हुए वह कब सोया याद नहीं। सुबह आँख खुली तो कमरा खाली था। बाहर धूप चढ़ आई थी। उसकी आँखों में तीखी जलन हो रही थी और वे कीचड़ से सनी हुई थीं। पूरे बदन में तेज दर्द था और उठने की इच्छा नहीं हो रही थी।

दूर कहीं किसी रेडियो या टी.वी. से समाचार प्रसारित हो रहे थे पर आवाज इतनी अस्पष्ट थी कि कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उसे ध्यान आया, उसने पिछले दो दिनों से न तो टी.वी. पर समाचार सुने थे न ही कोई अखबार पढ़ा था। सब कुछ वहाँ उसकी आदतों के विपरीत था। राजनीति में उसकी शुरू से दिलचस्पी रही है और वह प्रत्येक रोजमर्रा की तेजी से बदलती राजनीतिक सरगर्मियों से वाकिफ रहता था लेकिन पिछले दो दिनों में देश में क्या हुआ उसे ज्ञात नहीं था। न जाने क्यों वह उस वक्त बेहद उतावला हो गया और जैसे ही उसे पहली बार फ्रैंकलिन दिखे उसने अधीरता से न जाने कैसे पूछ लिया–''आप अगर इजाजत दें तो मैं घर जाकर टी.वी. पर न्यूज सुन आऊँ?''

उसने बहुत बचकानेपन से पूछ तो लिया लेकिन तत्काल उसे निराशा हुई। जब

फ्रैंकलिन ने कहा–''मैंने तो कोई दबाव आप पर डाला नहीं है। पहले भी कहा था, आपका मन नहीं लग रहा है तो आप जाएं। यहां वैसे भी बहुत तकलीफें है।''

फ्रैंकलिन की आवाज के पीछे एक विनम्र गुस्से को वह ताड़ गया। वह चुप ही रहा। एक अज्ञात अपराध बोध के चलते वह उनसे यह नहीं कह सका कि वह सिर्फ थोड़ी देर के लिए जाना चाहता है और लौट के आ जाएगा। वे उसकी बात को गलत ढंग से क्यों समझ रहे हैं।

फ्रैंकलिन अपने कामों में निरपेक्ष भाव से ऐसे लगे हुए थे जैसे कुछ हुआ ही न हो। यह देखकर वह भारी मन से उठा और बाहर नल पर नहाने चला गया।

वहाँ गिरीश के दिन इसी बेसब्री, छटपटाहट और बेचैनी से कट रहे थे। वहाँ वह जिस उद्देश्य से था वह पूरा नहीं हुआ था और उसे उसकी कतई उम्मीद नहीं थी। किसी संयोग से भी कोई सांप वहाँ नहीं दिखा था इसलिए एक बात वह तय मानकर चल रहा था कि फ्रैंकलिन किसी भयानक फोबिया से ग्रस्त है ओर उनकी हालत दिन-प्रतिदिन धीमे-धीमे खराब होती जा रही है। वह है कि उनकी किसी दूसरी तरह से मदद करने की जगह उनकी बातें एक तरह प्रत्यक्ष रूप में मानकर उनकी बढ़ती बीमारी में सहायक हो रहा है। अब तक के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रयत्न उसके बेकार साबित हुए थे। हालाँकि सांप के किस्से के अलावा उनके अंदर कुछ भी ऐसा असामान्य नहीं था जिसके चलते उनके अंदर किसी तरह की बीमारी का संदेह हो, मगर वे इतने संवेदनशील थे कि उनसे किसी दूसरी तरह की बात करना बिल्कुल आसान नहीं था। कम-से-कम गिरीश स्वयं को इस सिलसिले में अक्षम समझता था और अपनी वहां पर हरने की परेशानी को निरर्थक मान रहा था।

काफी दिन वहाँ रहते हुए हो गए थे पर फ्रैंकलिन की हालत में कोई सुधार उसे नहीं दिखा था। शुरू में वह सिर्फ यही मानकर चला था कि उनके अंदर का अकेलापन और उसका बुरा प्रभाव उसके साथ रहने से दूर हो जाएग। इस तरह उसका वहाँ रहना सार्थक होगा मगर ऐसा नहीं हुआ था बल्कि उसकी अपनी तकलीफें बढ़ गई थीं। उसे अच्छा भोजन नहीं मिल रहा था, उसकी नींद गायब हो गई थी। वह संसार की तमाम सूचनाओं से एकदम कट गया था। उसके पास जीवन की आवश्यक सहूलियतें थीं पर अचानक उन सुखों से अकारण वह दूर हो गया था। हैरत उसे काफी गहराई से इन बातों पर अवश्य होती थी कि फ्रैंकलिन के पास माध्यमों का सर्वथा अभाव था पर रोजमर्रा की सूचनाओं, बदलती सामाजिक स्थितियों और राजनीति की जानकारियां बाकायदा उनके पास होती थीं और वे उन पर खुलकर चर्चा भी करते थे। उसे उनके साथ इतने

दिन रहने के बाद भी यह सब समझ में नहीं आया था और हैरत अब भी कायम थी।

मगर उस वक्त उसे इन बातों की गहराई में जाने की कोई दिलचस्पी नहीं थी और वह फ्रैंकलिन से कुछ सीधी बात करने का इंतजार कर रहा था।

फिर किसी दिन और इंतजार करना उसने मुनासिब नहीं समझा और फ्रैंकलिन को एक शाम कुछ प्रसन्न देखकर बगैर भूमिका के कहा–''आप अन्यथा नहीं लेंगे पर आज तक आपका वह साँप मेरे रहते तो नहीं दिखा। मैं आपकी तकलीफ समझाता हूँ इसलिए मेरी सलाह मानें। मैं आपको एक अच्छे डॉक्टर के पास ले चलता हूँ। मुझे विश्वास है आप जल्दी ठीक हो जाएँगे, फिर आपको कोई साँप-वाँप नहीं दिखेगा।''

वे पहली बार गुस्से से पलटे और कहा–''आप क्या समझते हैं, मैं पागल हो गया हूँ? आपके आने के बाद भी वह रोज मुझे दिखता है। उसकी हरकतों में कोई फर्क नहीं आया है। मुझे समझ नहीं आता आप उसे क्यों नहीं देख पाते। फिर मैं यह कैसे विश्वास कर लूँ कि आपको वह अभी तक नहीं दिखा होगा। यदि आपकी बात मैं मान भी लूँ कि वह नहीं है तो उसके न रहने पर वर्षों से लगातार जो सपना मैं अधूरा देख रहा हूँ उसे पूरा हो जाना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ है और आपसे मेरी विनती है, अपनी सलाह अपने पास रखें।''

गिरीश बेहद घबरा गया उनकी बातें सुनकर। उन्हें इतना खिन्न और गुस्से में उसने कभी नहीं देखा था। वह चुप हो गया। उसने महसूस किया कि फ्रैंकलिन की हालत कमोबेश फिर उस दिन की तरह हो गई थी जैसी पहले दिन सांप के बारे में बताते हुए हुई थी।

शायद यह गिरीश की आखिरी कोशिश थी कि वह अपनी तरह उनके भ्रम को दूर करे और अपने विश्वास के मुताबिक उन्हें सलाह दें। इस आखिरी कोशिश के पहले उसे बहुत हद तक यह विश्वास था कि वे जिद नहीं करेंगे और उसकी बात मान लेंगे। पर वह बुरी तरह असफल हो गया। फिर वह बिल्कुल असहाय सा हो गया। अब उसके पास दो ही विकल्प बचे थे–पहला, या तो वह बिना कुछ उनसे कहे अपने घर चला जाए और कभी उनसे कोई संबंध भी थे, यह भूल जाए। दूसरा, उनकी बातों को सच मान ले और उनकी हाँ में हाँ मिलाए। ये दो विकल्प थे, जिन पर वह सोच चुका था। लेकिन उसने पाया था कि वह दोनों में से किसी एक पर भी नहीं चल सकता। वह किसी को भी चुनने पर अंतत: दोगला कहलाएगा। अगर वह भाग जाता है तो फ्रैंकलिन उसे दोगला और धोखेबाज कहेंगे आगे और यदि वह उनकी हाँ में हाँ मिलाता है तो उसका अंतर्मन उसे दोगला कहेगा। दूसरी स्थिति ऐसी थी जिसमें वह जिंदा रहने की

कल्पना नहीं कर सकता था। तीसरा विकल्प कोई नहीं बनता था।

वह कुछ दिन और इंतजार करता रहा कि संभव है स्थितियाँ कुछ ऐसी बनें कि अपने आप सब कुछ ठीक हो जाए पर वैसा भी नहीं हुआ। केवल कुछ अजीब-अजीब घटनाएँ जरूर घटती रहीं जिन्हें रहस्यमय कहा जा सकता था लेकिन वे ऐसी नहीं थीं जिन्हें वह नुकसानदेह कह सकता। अब हर तरह से सोच-सोच कर उसका सिर चकराता रहता था। उसका मन और कहीं लगता ही नहीं था। फ्रैंकलिन के घर से दूर दफ्तर में रहने पर भी। उसे अंततः यह महसूस होने लगा था कि वह बरसों से एक खुली जेल में रह रहा है। अब अपना घर अतीत के किसी सुखद सपने की तरह याद आता। और यह सबसे अजीब था कि जैसे ही उसे अपना घर याद आता वह तकलीफ से तड़पने लगता। उसकी तकलीफ बढ़ने लगती और सिर तड़तड़ाने लगता।

एक सुबह जब वह उठा तो शरीर बेहद निढाल था। वह अपने अंदर बहुत कमजोरी महसूस कर रहा था। सुबह मिलने वाली ताजगी वैसे तो कम होती जा रही थी लेकिन उस दिन वह शून्य पर पहुँच चुकी थी। वह फ्रैंकलिन से लगातार कतराता रहता लेकिन उस दिन वह उनकी सूरत भी नहीं देखना चाहता था पर वे बार-बार सामने आ रहे थे। वह बार-बार इधर-उधर मुँह फेर रहा था। मगर न चाहने के बाद भी एक बार उसकी नजर उन पर टिक गई। उसने देखा, वे तेजी से कुछ खोज रहे थे और उनका मुँह कुछ ऐसा बन रहा था जैसे वे कुछ सूंघ रहे हों। वे बार-बार म्याली की ओर देख रहे थे। उसने भी जब वहाँ देखा तो कुछ नहीं पाया। उसकी निगाह वापस जब उनके चेहरे पर गई तो उसे महसूस हुआ वे घबराए हुए हैं। वे उस वक्त कतई इस दुनिया के आदमी नहीं लग रहे थे। उसकी निगाह किसी अदृश्य शक्ति के वश में होकर उन पर टिकी हुई थी और चाहने पर भी नहीं हट रही थी। अपनी इस कमजोरी को वह समझ न सका और एक झटके से उठा और बाहर हो गया। उस वक्त उसे उन पर दया भी आ रही थी और गुस्सा भी।

अभी समय शेष था मगर उसने दफ्तर की राह पकड़ ली और चलता चला गया।

दफ्तर में पूरा समय कैसे गुजरा उसे बिल्कुल पता नहीं चला। वह जैसे किसी सम्मोहन में था। रात जब होने को आई तो उसने खुद को किसी समय दफ्तर में अकेला बैठा पाया। वह हड़बड़ाकर अपनी टेबल से उठा और तेजी से बाहर की ओर लपका।

जब वह सड़क पर पैदल चल रहा था तो अचानक उसे लगा उसकी पैंट नीचे की ओर खिसक रही है। उसने सोचा, शायद बटन टूट गई है और पैंट पर हाथ लगाया तो पाया कि वह अपनी जगह पर है और काज में फँसी है। फिर पैंट क्यों खिसक रही है समझ न आया। क्या वह दुबला हो गया है? उसने संदेह से बुशर्ट उठाकर दोबारा जाँच की। लेकिन बटन अपनी सही जगह पर थी। यह देखकर वह घबरा गया। उसने एक हाथ डाला तो शरीर और पैंट के बीच में वह आसानी से चला गया। अब संदेह की गुंजाइश नहीं थी। वह घबराहट में बुदबुदाया-''ये हो क्या रहा है मुझे?''

उसने स्मरण शक्ति पर जोर डाला, कहीं उसने किसी और की पैंट तो नहीं पहन ली? लेकिन नहीं, यह तो वह पैंट थी जिसे छह महीने पहले पत्नी ने उसके जन्म दिन पर सरप्राइज के साथ उसे गिफ्ट किया था। वह और बेचैन हो गया। उसे तभी कुछ याद आया, उसने खोजती निगाहों से चारों ओर देखना शुरू किया। उसके कदमों की रफ्तार फिर चार गुना बढ़ गई थी। वह एक जगमगाती टाकीज के पास आकर रुका। उसे वजन तौलने की मशीन बाहर ही दिख गई थी। वह दौड़कर उसके पास पहुँचा और दूसरे सेकेंड उस पर खड़ा हो गया। संकेतक चक्र जैसे ही रुका उसने एक सिक्का उसमें डाला। कार्ड जब बाहर आया और अपना वजन उसने देखा तो उसकी घबराहट और हैरत का ठिकाना नहीं रहा। उसका वजन आठ किलो कम हो गया था। वह बेतहाशा पागलों की तरह अपने शरीर पर हाथ फेरने लगा। जब उसके हाथ अपने चेहरे पर पहुँचे तो वह कुछ ढूँढ़ने लगा लेकिन असफल होने पर वह तेजी से फिर चल पड़ा। उसकी चाल की रफ्तार और बढ़ गई थी।

फ्रैंकलिन के घर तक का रास्ता उसने लगभग दौड़ते हुए तय किया। दरवाजा खुला था और कमरे में कोई नहीं था। उसका पागलपन बरकरार था और वह सारे सामानों को कुछ ढूँढ़ते हुए अस्त-व्यस्त कर रहा था। उसे याद था, आदमकद टूटे हुए आईने का एक लंबा टुकड़ा कभी उसने उस कमरे में देखा था। बहुत देर की मेहनत के बाद अंततः उसे वह टुकड़ा मिल ही गया। बेसब्री से उस पर छाई धूल उसने अपने हाथ से साफ की और ठिठक गया। वह उस आईने में अपने आप को देखने की हिम्मत बटोर रहा था। कई क्षण तेजी से गुजरे फिर एक झटके से आईना उसने अपने चेहरे के सामने किया। नजर पड़ते ही एक चीख उसके मुँह से निकलते-निकलते बची। वह अपने आपको पहचान नहीं पाया। उसके चेहरे से मांस लगभग गायब था। गाल अंदर धंस गए थे और जबड़ा उभर आया था। रंग काला पड़ गया था और आँखों के नीचे झाइयाँ स्पष्ट दिख रही थीं। वह खौफ से दोबारा बुदबुदाया-''ये क्या हो गया मुझे?'' फिर अचानक उसने बेहद खौफनाक बात देखी। उसका चेहरा काफी हद तक फ्रैंकलिन के चेहरे जैसा हो गया था। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। वह काँपते हुए बड़बड़ाया-''यह सच नहीं हो सकता। ये भ्रम है।'' उसने आईने को घृणा से दूर फेंक दिया। कई

तरह की भद्दी आवाजों से कमरा गूँज उठा। फिर बड़ी देर तक वह लंबी-लंबी साँसें लेता रहा। उसने महसूस किया, वह ठंडे पसीने से नहा रहा है और पूरा कमरा गोल-गोल घूम रहा है।

डसे दूसरी कोई बात नहीं सूझी। उसने तत्काल एक अनैतिक और दोगला फैसला किया और सोचा कि अब वह यहाँ एक पल नहीं रुकेगा। बिना देर किए वह पलटा और कमरे के बाहर निकला पर देर हो चुकी थी। वह चौंक गया, सामने फ्रैंकलिन खड़े थे मुस्कुराते हुए। उसने नजरें हटाकर लड़खड़ाती जुबान में कहा-"अंदर जरा ज्यादा गर्मी थी इसलिए मैं बाहर...।"

"हाँ-हाँ, जरूर जाइए। मैं घर पर ही रहूँगा," फ्रैंकलिन ने कहा और उसे जाते देखने लगे। काफी दूर पहुँचने पर उसने पलटकर देखा। फ्रैंकलिन उसे तब भी देख रहे थे। उनके चेहरे पर कोई अदृश्य पीड़ा थी। उन्होंने एक बीड़ी जलाई और लंबे-लंबे कश लेने लगे।

उस रोज जब रात गहराने लगी तो सन्नाटे में एक विचित्र सनसनी थी। झींगुरों की आवाजें भी नहीं थीं। गली की स्ट्रीट लाइटें अनजान कारणों से गुल थीं और आकाश में तारों की लाचार रोशनी के अलावा कोई प्रकाश वहाँ कहीं नहीं था। आमतौर पर ठहर-ठहर कर गली को गुँजा देने वाली कुत्तों के भौंकने की आवाजें भी बहुत देर से ठहरी थीं। कुत्ते थे नहीं या कहीं दुबक गए थे।

इन सबके विपरीत फ्रैंकलिन के कमरे में जरूर हलचल थी। चिरपरिचित पीली रोशनी में ऊपरी तौर पर मगर सब कुछ शांत लगता था। गिरीश पूरी तरह असंयत था और वही बेस्वाद भोजन करने के बाद खटिया पर लेटा था। हर तरह के प्रदूषण से पीड़ित उसका पेट खौल रहा था। पहले दिन से शुरू हुई खट्टी डकारें आज कुछ अधिक उछालें भर रही थीं और इस वजह से उसके सीने में एक तीखी जलन हो रही थी। वह समय उसके लिए अपूर्व था। सारे कष्ट अपूर्व थे। उसके अंदर चुपचाप निकलकर चले जाने में हुई असफलता का भारी पछतावा था। सिर्फ एक-दो मिनट की देरी की वजह से वह सुख की पुनप्राप्ति में असफल हो गया था।

दूसरी खटिया के चरमराने पर वह अचानक चौंका। फ्रैंकलिन उसी वक्त लेटे थे। तभी कमरे में कोई आवाज आनी शुरू हुई। एक निश्चित आवृत्ति में वहाँ भाँय-भाँय हो रही थी। वह सन्नाटे की आवाज थी। उसके सीने की जलन गले तक पहुँच गई थी। यह चरम था, इन्तेहा थी। किसी क्षण फिर फ्रैंकलिन के नथुनों और पोपले मुँह से खर्राटे की आवाजें आने लगीं। अब सन्नाटा टूट रहा था। गिरीश के लिए अब सब कुछ असहनीय

हो गया था। उस वक्त उसके शिथिल स्नायुओं में भयावह तनाव हो रहा था। उसके अंदर की कोई बेहद मूल्यवान चीज चुक रही थी। वह खुद को कराहता हुआ महसूस कर रहा था। बहुत गहरे पैदा रुदन बाहर आने को उतावला था। उसने आँखें मूँद ली थीं।

अभी इस स्थिति में थोड़ा समय ही गुजरा था कि एक महीन पर तेज सीटी की आवाज ने उसे चौंका दिया। उसकी आँखें खुलते ही एक खौफनाक चीख उसके मुँह से निकली। एक लंबा अनेक रंगों वाला साँप उसके चेहरे के सामने म्याली से लटका झूल रहा था और अपनी जीभ निकालकर फुफकार रहा था। गिरीश के दाँत चीख के बाद आपस में बँध गए थे और वह किट-किट की आवाज के साथ काँप रहा था।

फ्रैंकलिन हड़बड़ाकर जाग गए थे और "क्या हुआ, क्या हुआ?" पूछ रहे थे। उससे कुछ बोलते नहीं बन रहा था, वह सिर्फ साँप की तरफ इशारे कर पा रहा था। फ्रैंकलिन ने उस ओर गौर से देखा पर उन्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ा।

अभी वे उठकर उसे सँभाल पाते कि वह अचानक उसी बदहवासी में उठा और दौड़ते हुए कमरे से बाहर हो गया। फ्रैंकलिन उसके पीछे चिल्लाते हुए दौड़े पर वह गली में भागता ही चला गया। उनकी बूढ़ी आँखें कुछ दूर ही उसका पीछा कर सकीं, फिर सब कुछ अंधकार में डूब गया। वे वापस मुड़े और निराश होकर अंदर आ गए। कभी न बुझने वाली पीली टिमटिमाती रोशनी और पीली पड़ रही थी। लंबे अंतराल के बाद वे फिर अकेले थे। उन्हें दोबारा नींद का इंतजार था और वे अपने सपने को पूरा करना चाहते थे। उन्हें अफसोस था कि गिरीश ने उनसे उनके सपने के बारे में कभी नहीं पूछा।

वे खटिया पर आँखे मूँदकर लेट गए। उसी वक्त उनके बर्तनों के पास खटर-पटर शुरू हो गई थी। उन्होंने सिर घुमाकर देखा, बर्तनों के बीच वह सरसरा रहा था और उनके उस ओर देखते ही आवाजें आनी बंद हो गई थीं।

राजेंद्र दानी

जन्म : 5 नवंबर, 1953

प्रकाशन : दूसरा कदम, संक्रमण, उनका जीवन, कछुए की तरह, नेपथ्य का अंधेरा, महानगर (कहानी संग्रह)

सम्मान : अखिल भारती मुक्तिबोध पुरस्कार